PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 5, ISSUE 3

रंगभेद भारतीय संस्कृति पर प्रश्न चिन्ह

डॉ. दीनदयाल

असिस्टंट प्रोफेसर

राजकीय महाविद्यालय, माँट, मथुरा

उत्तर प्रदेश भारत.

भारतीय संस्कृति पूरे विश्व में मानवता आपसी संबंध भाईचारा सामांजस्य सहिष्णुता एवं सामुहिक भावना के लिए विख्यात हैं। विश्व के साहित्य में मजबूत संबंधों के लिए चाहे वह पति–पत्नी के मध्य हो, चाहें भाई–भाई, भाई–बहन, माता–पिता, पिता पुत्र या गुरू शिष्य के मध्य क्यों न हो। गुरु शिष्य के संबंध के बारे में एकलव्य का उदाहरण नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा पद है। इस तरह एकलव्य ने गुरु के प्रति सच्ची लगन और श्रद्धा से उसकी मिटटी की प्रतिमा स्थापित कर धनुष विद्या में प्रविणता हासिल कर ली थी। ऋषि मुनियों के प्रति अटूट सम्मान का उदाहरण शिवाजी और गुरु रामदास के बारें में पढ़कर मालूम पड़ता हैं, राजा होते हुए भी शिवाजी गुरु के प्राण बचाने के लिए (जबकि वह गुरु द्वारा उसकी परीक्षा मातृ थी) शेरनी का ताजा दूध प्राप्त करने के लिए जंगल में दोड़ पड़े थे शेरनी भी शिवाजी की गुरु के प्रति सच्ची श्रद्धा और लगन को पहचान गये और अपने बच्चे को दूध पिलाने के साथ शिवाजी के गुरु के लिए दूध दुगने की अनुमति दे दी। इसी प्रकार के अटूट सम्बन्धों की असंख्या उदाहरण है। भारतीय संस्कृति में मिलते है। पति के प्रति सच्ची लगन और कर्तव्य का उदाहरण सावित्री और सत्यवान की कहानी से मालूम पड़ता हैं कि किस तरह सावित्री अपने पति के प्राण यम से बचाकर लाती हैं। पति के प्रति सच्ची श्रद्धा वो विश्वास का उदाहरण भारतीय संस्कृति में प्रचलित व्रत करवां चौथ से मिलता है इस दिन सभी तरह की महिला अपने पति की दीर्घ आयु के लिए निर्जला करवा चौथ व्रत रखती हैं और चन्द्रमा को देखने के बाद ही खाना खाती हैं।

भाई भाई के लिए अटूट समर्पण और स्नेह का उदाहरण राम और लक्ष्मण के जीवन चरित्र को पढ़ने से मिलता है कि लक्ष्मण अपने बड़े भाई को पिता तुल्य समझ कर महल के राजश्री शुख और आनन्द को त्याग कर अपने भाई की सेवा के लिए चौदह वर्ष तक वन में रहे थे लक्ष्मण ने चौदह वर्ष तक बिना सोये सेवा की थी। जब राम रात को सो जाते थे तो लक्ष्मण धनुष तथा वाण लेकर उनकी सुरक्षा के लिए पहरा देते थे। यह राम के प्रति उनकी अटूट श्रद्धा थी। उसी तरह माता–पिता के प्रति

अटूट भक्ति और कर्तव्य की भावना श्रवण कुमार के जीवन के बारे में पढ़कर और सुनकर पाते है कि किस तरह श्रवण कुमार अपने अन्धें माता पिता की चार धाम की तीर्थ यात्रा के उनके अन्तिम समय में पूरा करने के लिए तराजू के पलड़ों को कन्धे पर उठाकर ले जाते हैं। अपने वचन पर बंधे रहने का उदाहरण भी हमें भारतीय संस्कृति में राजा हरिश्चन्द्र की कथा सुनने से मालूम पड़ता है कि वह विश्वामित्र को अपना पूरा राज्य उनके द्वारा ब्राहम्ण भेष में मागने पर दे देते हैं। अपनी पत्नी तारामति तथा पुत्र रोहितास के साथ राज्य छोड़कर मजदूरी के लिए नौकर के रूप में अपने आप, पत्नी और पुत्र के साथ विश्वामित्र के द्वारा बेचे जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। भारतीय संस्कृति भारत की मूल्य धरोहर है। इसका सरंक्षण करने पर वर्तमान में रंगभेद जैसी कुरीतियां ने प्रश्न चिन्ह खड़ा कर दिया है। प्राचीन समय में विवाह जैसे पवित्र रिस्ते को लम्बे तक बनाये रखने के लिए पुत्र–पुत्री का हृदय पिता परिवार के अनुभवीय बुजुर्ग सदस्यों द्वारा चुने हुए वर या वधु को स्वीकार कर लेते थे। लड़की–लड़के के दिमाग में काले गौरे का कोई प्रश्न नहीं रहता था। अक्सर देखने को मिलता था कि पति गौरा होता था और पत्नी साबले रंग की, और पत्नी गौरी होती थी तो पति सांबले रंग का। इस प्रकार विपरित रंग की जोड़ों में विवाहिक संम्बन्ध लम्बे समय तक चलता थां और उनमें टूटने या गांठ आने का कोई प्रश्न नहीं था। परंतु आज विदेशी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव द्वारा जनमित फैशन और रहन सहन में और वहॉ की नकल और बोलने और खाने पीने के तरीको में वहॉ की नकल ने भारतीय संस्कृति की महान प्रतिष्ठा और धूमिल करने की कोशिश की और परिणाम रंगभेद के कारण विवाह सम्बन्धों में स्थिरता बदल गई हैं। लड़के लड़की माता पिता द्वारा निर्धारित वर या वधु को ठुकराने लगे है और वह एक दूसरे से अधिक गौरा वर या वधु अपने जीवन साथी के रूप में देखना चाहते है। महान अंग्रेजी साहित्यकार टोमस कैरे कहते है कि शारीरिक सुन्दरता को अतिशीघ्र समाप्त होने वाली संज्ञा दी है। अपनी अग्रेंजी कविता ज्तनम इमंजल मे वह लिखते है कि –

“He that loves a rosy cheek
Or a coral lip admires
Or from star like eyes doth seek
Fuel to maintain his fires
As old time makes these decay,
so his flames must best abbey.”
True Beauty, 25

रंगभेद पर नारी के विरुद्ध शोषण की आवाज डा0 दीन दयाल के उपन्यास My Wheatish Complexion में उठाई गई हैं। इसमें मुख्य नायिका अंजली अपनी माँ गायत्री से कहती हैं कि गम्भीर विचारोपरांत ही फैसले लेने की नसीहत दी है। भारतीय समाज में विवाह–विच्छेद के बारे में प्राचीन समय में परिकल्पना भी नहीं की जा सकती थी क्योंकि पति पत्नी के मध्य अटूट प्रेम प्रगांढ़ सम्बन्ध एवं समर्पण की भावना थी, परंतु वर्तमान समय में विवाह–विच्छेद बहुत बड़ी समस्या के रूप में उभरकर आया है। दहेज प्रथा के साथ–साथ रंगभेद भी उसका मुख्य कारण है रंगभेद के कारण शादी के तुरंत बाद अनेक लड़कों ने अपनी पत्नियों को छोड़ दिया है, और घर से कई कई वर्षों तक बाहर गायब हो जाने के कारण किया हैं, और घर पर जब वापस हुए हैं जब लड़की वालों ने लड़की की शादी अन्यत्र

कर दी है। रंगभेद के कारण विवाह विच्छेद पर डा0 दीन दयाल कहते है – ''लड़की को लड़के के व्यवहार में अचानक परिवर्तन का कारण उसका सावला रंग होता है जिसके कारण लड़की के अन्दर हीन भावना पैदा हो जाती है और इसका कारण दोनों के आपसी सम्बन्धों में गिरावट एवं दूरियां में परणित हो जाता है। परिणाम स्वरूप दोनों के मध्य विवाह–विच्छेद हो सकता है।'' (विवाह विच्छेद, 195)

रंगभेद भारतीय समाज में एक अभिशाप है जो महिला सशक्तिकरण नाम पर हल्ला है। इससे अनेक लड़कियां विवाह से पूर्व ही आत्महत्या कर लेती है क्योंकि जब वे अपने माता–पिता को उनकी शादी में सांवले रंग के लिए उचित वर की तलाश मेंअसफल देखती है, तथा उन्हे आघात लगता है, और मानसिक निराशा और हताशा में वे आत्महत्या करने को विवश हो जाती है।

संदर्भ सूची

1. पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य बाड्मय 79, अखण्ड ज्योति संस्थान, युग निर्माण योजनाओं विस्तार ट्रस्ट, मथुरा 2018
2- Gitanjali (Song Spring) by R. Tagore, Peacockbookks, New Delhi 2011 print.
3- Rage, sharmila, Writing caote/writing gender. Zubaan, New Delhi 2006.
4. Kabir humayun. Social and Political Idea of Tagore (Compiled) Pankaj publication International Delhi, 1987.